

**क्रोध के दिन धन व्यर्थ है,
परन्तु धर्म मृत्यु से बचाता है नीतिवचन 11:4 – एक कहावत की कहानी टेड हिल्डेब्रांट और
चैटगृ**

दो महान नदियों के बीच बसे एक समृद्ध राज्य में, सेड्रिक नाम का एक आदमी रहता था, जो अपनी अपार संपत्ति के लिए दूर-दूर तक जाना जाता था। उसके पास जहाजों के बेड़े, कई एकड़ उपजाऊ ज़मीन और सोने से भरी तिजोरियाँ थीं। लेकिन जो चीज़ उसे उसकी दौलत से ज़्यादा अलग बनाती थी, वह था उस पर उसका गर्व। "सोना सभी तूफ़ानों के खिलाफ़ ढाल है," वह अक्सर शेखी बघारता था। "ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसे सोने का सिक्का हल न कर सके," वह कहता था।

इस राज्य के किनारे, बेलों और जंगली फूलों से घिरी एक साधारण झोपड़ी में, जो नाम की एक बूढ़ी विधवा रहती थी। उसकी एकमात्र संपत्ति उसकी दयालुता और दूसरों को दी जाने वाली खुशी थी। वह अपना दिन बीमारों की सेवा करने, भूखों को खाना खिलाने और अकेले लोगों को सांत्वना देने में बिताती थी। हालाँकि उसके पास बहुत कम था, फिर भी वह दिल खोलकर देती थी, यह मानते हुए कि धार्मिकता और अच्छाई सोने से कहीं ज़्यादा टिकाऊ मुद्रा है। सेड्रिक, अपने रथ पर सवार होकर, अक्सर जो की साधारण झोपड़ी के पास से गुज़रता था, और अपने विशाल शहर की दीवारों के बाहर उसकी गरीबी पर मज़ाक उड़ाता था।

एक गर्मियों में, पूर्व में एक काला बादल छाने लगा - मौसम का नहीं, बल्कि युद्ध का। प्रतिशोधी और निर्दयी एक बड़ी सेना ने पूरे देश में तबाही मचा दी, और अपने पीछे बर्बादी छोड़ गई। राजा ने अपने सामंतों और धनी व्यापारियों को शहर को मजबूत करने के लिए बुलाया। सेड्रिक को अपनी दौलत के डर से उन्हें गहरे भूमिगत में बंद कर दिया और सोने के वादे के साथ भाड़े के सैनिकों को काम पर रखा। "उन्हें आने दो," उसने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा। "कोई भी क्रोध धन की सुरक्षा को नहीं तोड़ सकता।"

लेकिन क्रोध आया, तीव्र और निर्मम।

शहर जल गया। भाड़े के सैनिक भाग गए। और सेड्रिक, गहनों की एक छोटी सी बोरी पकड़कर, धुएँ से भरी सड़कों से भागा और अपने जलते हुए शहर से बाहर निकल गया। वह शहर की दीवारों के बाहर एक छोटी, मामूली झोपड़ी में पहुँचा, जहाँ जो और अन्य लोगों ने शरण ली थी। हमलावर सेना ने ऐसी गरीब जगहों को नज़रअंदाज़ कर दिया, इसलिए झुग्गी उन लोगों के लिए एक आश्रय स्थल बन गई जिनके पास कुछ भी नहीं बचा था।

सेड्रिक ने दरवाज़ा खटखटाया। "मुझे अंदर आने दो!" वह चिल्लाया। "मैं पैसे दे सकता हूँ! मेरे पास गहने हैं!"

ज़ो ने उसकी आवाज़ पहचान ली। अंदर से उसने किसान से फुसफुसाकर कहा, "दरवाज़ा खोलो।" किसान ने झिझकते हुए उसकी बात मान ली।

अंदर, सेड़िक घुटनों के बल गिर पड़ा, हाँफ रहा था, गहने उसकी उंगलियों से फिसल रहे थे। उसने ज़ो और वहाँ छिपे हुए दयनीय लोगों की टोकरी को देखा - बच्चे, बूढ़े, गरीब। उनके पास कुछ भी नहीं था, फिर भी वे शांत थे।

वह ज़ो की ओर मुड़ा। "तुमने मुझे अंदर क्यों आने दिया? मैंने तुम्हारा मज़ाक उड़ाया और तुम्हारा मज़ाक उड़ाया।"

ज़ो ने उसके कंधे को धीरे से छुआ। "सोना कभी मेरा मापदंड नहीं रहा। दया और धार्मिकता ही मेरा मापदंड है।"

युद्ध समाप्त हो गया। राज्य धीरे-धीरे फिर से बना, धन-दौलत से नहीं, बल्कि धार्मिकता से। सेड़िक ने नम्रता से अपने सोने के विशाल भंडार बेच दिए और विस्थापितों के लिए घर बनवाए।

उसने अपने बचे हुए दिन ज़ो के साथ बिताए, और सीखा कि कुछ चीज़ें कभी नहीं खरीदी जा सकतीं-भरोसा, दयालुता, वफ़ादारी और धार्मिकता।

अंततः, उसकी तिजोरी में रखे सोने के सिक्कों ने नहीं, बल्कि एक गरीब विधवा की धार्मिकता ने उसे बचाया।

उसे वह प्राचीन ज्ञान समझ में आया जिसे वह पहले नज़रअंदाज़ करता था:

“क्रोध के दिन धन व्यर्थ होता है, परन्तु धर्म मृत्यु से बचाता है।”—नीतिवचन 11:4 .